



भारतीय ज्ञानपरंपराना बीज श्रीमद्भगवद्गीताना संदर्भ

डॉ. महेशकुमार जी. पटेल
आसिस्टन्ट प्रोफेसर, अनुस्नातक संस्कृत विभाग,
सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभविद्यानगर.

भारतीय ज्ञानपरंपराना बीज वेदमां रहेलां छे अने तेना परिपाकरूपे अन्य ग्रंथो-शास्त्रो रचायां छे. उपनिषदो अे वेदोनो अर्क छे अटले ज आचार्योअे तेने वेदांत कहां छे. ते वेदांतनी परंपरामां प्रमुख त्रण प्रस्थानो अटले के उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता अने ब्रह्मसूत्र. आ त्रिविध प्रस्थानोमां प्राचीन ज्ञानपरंपराना मूल सिद्धांतो अने द्रष्टांतो जोवा मळे छे. जे आजना भौतिक युगमां खुबज उपयोगी छे कारण के प्राचीन ज्ञानपरंपरा जीवने शिव तरफ गति करावे छे तेमज शाश्वत सुखनी प्राप्ति करावे छे.

प्राचीन काळथी ज मनुष्य पोताना अस्तित्वनी शोध करतो आव्यो छे. जन्मथी मृत्युपर्यंत आदर्शजीवन जीववानी साथे संसारनी उत्पत्ति केवी

रीते थइ? जीवनमां शुं प्राप्तव्य छे? शुं त्याग करवा योग्य छे. संसारना दुःखमांथी केवी रीते मुक्त थवुं? वगरे प्रश्नोनो उकेल मेळववा प्रयत्नो करे छे. परंतु ते तरफ सहजताथी प्रयत्न करी शकतो नथी तेथी उपस्थित थती समस्याओना समाधान माटे शास्त्रो खुबज उपयोगी छे.

भारतीय ज्ञानपरंपरामां वेदो, उपनिषदो, दर्शनो, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत अने श्रीमद्भगवद्गीता जेवा मूलाधार शास्त्रीयग्रंथो छे, जेमांथी जीवनना उत्कर्ष माटे पायानुं ज्ञान प्राप्त थाय छे. शास्त्रोमां सृष्टि उत्पत्ति तथा समग्र भूत-प्राणीओनी उत्पत्ति अंगे विवरण उपलब्ध थाय छे. ते प्राणीओ चार प्रकारनां छे, जेम के पशुओ, मृगो, बन्नेबाजु दांतवाळां हिंसक प्राणीओ, राक्षसो, पिशाचो अने मनुष्य अे बधुं "जरायुज" छे.¹ वळी, बीजा "अंडज" उत्पन्न थाय छे, जेम के पक्षीओ, सर्पो, मगरमच्छ, माछलां, काचबा अने तेवा प्रकारनां जे स्थळचर तथा जळचर प्राणीओ. केटलांक "स्वेदज" थाय छे, जेम के दंश, मच्छर, जू, माखी, मांकड अने अेना जेवां बीजां जे जंतुओ स्वेद अटले के परसेवाथी उदभवे छे.²

आ उपरांत "उदभिज्ज" थाय छे, जमीन फाडीने जे उत्पन्न थाय छे ते बधी स्थावर सृष्टि.³ बी वाववाथी केटलांक ऊगे छे अने बीजा कलम के डाळ वाववाथी थाय छे. तेमांथी जेओने घणां पुष्पो तथा फळ आवे छे अने फळ पाड्या पछी नाश पामे ते ओषधि कहेवाय छे.

आ प्रकारनी उत्पत्तिप्रक्रियामां मनुष्य "जरायुज"मां आवे छे अने ते घणां प्रकारना दुःखदायक पूर्वजन्मोना पापने कारणे सृष्टिमां तमोगुणथी युक्त चेतनाना कारणे सुख अने दुःखनो अनुभव करे छे. आ दुःखोमांथी मुक्त थवा माटे भारतीय ज्ञानपरंपरा थकी शाश्वतता तरफ प्रयाण करी शकाय छे. आ माटे अेवा अवकाशनी जरूर होय छे जेनाथी ज्ञानप्राप्ति थइ शके. परंतु वर्तमान समयमां मानव भौतिक सुख-सगवडोमां रच्योपच्यो रहे छे, जेथी जीवनना उच्च ध्येयथी विमुख बन्यो छे. जेम ओरडामां वावेला छोडने प्राकृतिक तत्वो न मळता संपूर्णपणे विकसित थतो नथी, पण जो सूर्यप्रकाश, हवा, पाणी, आदि तत्वो मळतां तेनो विकसतो क्रम जोवा मळे छे. तेवुं ज मनुष्यना जीवनमां ज्ञानना क्षेत्रमां जोवा मळे छे.

ज्ञानपरंपरामां धर्मने केन्द्रमां राखीने विचारीअे तो, निरुक्तकार यास्काचार्य नोंधे छे- "साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयः बभूवुः । तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्यः उपदेशेन मन्त्रान् संप्रादुः । उपदेशाय ग्लायन्तो बिल्मग्रहणायेम ग्रन्थं समाम्नासिषुः वेदं वेदाङ्गानि चा बिल्म भिल्मम् । भासनमिति वा ।"⁴ जगतमां मनुष्यनी उछेरप्रक्रियानो ख्याल



करवामां आवे तो जननीना खोळे जन्मतुं शिशु, प्रकृतिना सान्निध्यमां आवतां विविध चेष्टाओ करतु उछरे छे. उछेरप्रक्रियाथी व्यवहारिक जीवननां पासांओ उजागर थाय छे. समयना वहेणनी साथे साथे बाल्यावस्था, युवावस्थाथी लइने छेल्ले मृत्यु सुधीनी यात्रा करे छे. विचारधाराने जोतां कहेवाय के निरुक्तकारे दरेकना अस्तित्वनी प्रक्रियानो ख्याल करतां निरुक्त (अध्याय-9)मां वार्ष्ण्यिणा मतानुसार भावविकारोने नोंध्या छे—*जायतेऽस्ति विपरिणमते वर्धतेऽपक्षीयते विनश्यतीति* । यास्काचार्य अहीं जन्मथी लइने नाश थाय त्यां सुधीनी प्रक्रियानी वात करे छे. तेने द्रष्टि समक्ष राखीअे तो जीवननां शारीरिक, मानसिक, वैचारिक, कार्यात्मक, अध्यात्मिक पासांओनो उत्कर्ष थवो जरूरी छे. आ विकासक्रममां ज्ञानपरंपरानी विचारधारानुं महत्व छे. तेने आधारे तेनी जीवनशैली बने छे.

लोकना द्रष्टांतने केन्द्रमां राखीअे तो— न्युटने सफरजनने नीचे पडतुं जोयुं अने जुदा जुदा द्रष्टिकोणथी विचार्युं, विचारना परिपाकरूपे गुरुत्वाकर्षणना नियमने स्थाप्यो. अम अेवुं कही शकाय के दरेक मनुष्य पासे विचारनी क्षमता होय छे, ते अमुक स्तर सुधी विचारी शके छे, जे विचार्युं छे ते नक्की करीने, तेने भौतिकजगतमां स्थापे छे अने जेनी अे स्थापना करे तेमां गूढ आंतरमथामण छुपायेल होय छे. हवे, आंतरमथामण करवानी क्षमता केवी रीते प्रगटे? ते विचारवामां आवे तो—

श्रीमद्भगवद्गीतामां युद्ध माटे तैयार थयेल अर्जुनने कौरवोनी सेनामांथी कोण कोण युद्ध माटे तत्पर छे अे जोवानी इच्छा थइ, तेणे सारथि अेवा भगवान श्रीकृष्णने कह्युं के, मारो रथ बे सेनाओनी मध्ये स्थापो.^५ भगवान तेम कर्युं, अर्जुने युद्ध माटे तत्पर स्वजनो, मित्रो, गु-जनो, वडीलो वगैरेने जोया,^६ तेणे मनमां जुदा जुदा विचारो कर्या, अेना परिणामनो विचार कर्या, अे पोते अेना मननुं समाधान करी शक्यो नही. परिणाम देखीतुं ज छे, अे पोते बळवान योद्धो होवा छतां स्वजनो प्रत्येना स्नेह, मित्रो प्रत्ये मैत्री, गु-जनो प्रत्ये निष्ठा, वडिलो प्रत्येनो आदरभाव जेवा जुदा जुदा भावोथी ग्रस्त थतां, पोतानी युद्ध करवानी क्षमता होवा छतां आ प्रसंगे गुमावी दीधी, शास्त्रो हेठां मूकी दइने भगवाननी सामे निःसहाय बनी आ बधानी साथे युद्ध न करवानो भाव लावी विषाद पाम्यो.^९

श्रीमद्भगवद्गीतानी शरूआतमां आवता आ द्रष्टांतथी समजी शकाय के, जीवनमां आवी पडता पडकारो, ते विषयक समज, निर्णय—क्षमता आ बंधुं व्यक्तिनी पोतानी आंतरिक सूझ-बुझ उपर अवलंबे छे अने ते प्रमाणे निर्णय ले छे. जीवनमां आ बधाथी पर रहेवा घणाबधां पासाओनो विचार करवो पडे छे.

भगवान श्रीकृष्ण विषाद पामेला अर्जुनने घणी रीते समजावे छे, परंतु तेने सरळताथी आ बंधुं समजातुं नथी ते वारंवार पोताने थता प्रश्नोना निराकरण अर्थ समजाववा माटे भगवानने प्रार्थना करे छे. अर्जुनना प्रश्नोना परिपाकरूपे संसारने श्रीमद्भगवद्गीतारूपी अमृत सांपड्युं छे. भगवान श्रीकृष्ण अने अर्जुनना संवादरूपे रहेला अढार अध्यायना आ ग्रंथमां ज्ञाननुं गूढरहस्य छुपायेलुं छे. शरूआतमां विषादथी घेरायेल अर्जुन गीतामां वर्णवेल ज्ञानप्राप्ति थकी छेल्ले युद्ध माटे सज्ज बनी युद्ध करे छे.

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।।^७

भारतीय ज्ञानपरंपरानुं विशेष सामर्थ्य छे वना सिद्धांतोने आत्मसात करवाथी जीवन—उत्कर्ष साधी शकाय. आ ज्ञानने उजागर करवा माटे मनुष्ये सतत प्रयत्न—अध्ययन—चिंतन—मननशील रहेवुं जोइअे, तो ज अे पोताना कर्मना लक्ष्यणे पर करी धीमे धीमे आगळ वधीने कर्म करतां करतां तेनुं फळ भोगवतां भोगवतां, ते ते फळनी अनुभूति पछी तेनी नित्यता के अनित्यतानो निश्चय थया पछी पोताना परमोत्कृष्ट गंतव्य स्थानने प्राप्त करे छे.

श्रीमद्भगवद्गीतामां श्रीकृष्ण अने अर्जुनना संवादमां जीवन उपयोगी संदर्भो सांपडे छे. युद्धमांथी निवृत्ति इच्छता तेने उपदेश आपवामां आवे छे. कह्युं छे के—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।^८

आ जगतमां जे कंइ उत्पन्न थयुं छे ते सर्व कांइ नष्ट थनार छे, आ घटमाळने जाणी शकाती नथी तेथी शोक करवो उचित नथी. आ संदर्भ प्रवर्तमान समयमां जीवनना उत्कर्ष माटे प्रेरणादायी छे. वळी, अहियां योगक्षेमनी पण चिंता करवानी नथी, अेनो संदेश योगक्षेमं वहाम्यहम् । थी मळी जाय छे, अने बेठेलो पण ऊभो थइ जाय अने कार्यमां सिद्धि मेळववा प्रेराय छे. सर्व कंइ कर्मो अे तत्त्वने अर्पण करवानो बोध पण मळे छे, अेनाथी जन्म—मरणना संसारमांथी बहार नीकळवानो मार्ग मळे छे.

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥^{१०}

भगवाननी विभूतिओ वर्णवी छे त्यां सघळ्णांन मूळ कारण अने उत्पत्तिविषयक निर्देश कर्यो छे, श्रीकृष्ण अर्जुनने कहे छे— मारां परमवचन सांभळ. उत्पत्तिना मूळ कारणने जाणी शकातुं नथी.

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
हमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥^{११}

देवगणो तथा महर्षिओने पण मारी उत्पत्ति ज्ञात नथी, कारण के हुं सर्व प्रकारे देवो अने महर्षिओनुं आदि कारण छुं. तेने केवी रीते जाणी शकाय? तो कह्नुं छे के— अजन्मा अटले के उत्पन्न न थनार, अनादि तथा सर्व लोकोना महान अधिपति इश्वरतत्त्वने जे जाणे छे ते ज्ञानवान सर्व पापोना पाशथी मुक्त थाय छे.^{१२} आ तत्त्वने केवी रीते जाणवुं अवेो प्रश्न थाय तो— ते तत्व केवुं छे अने तेना कया विकारो छे तेना निरूपणथी तत्वनी स्पष्टता थाय. अे विकारो जुदांजुदां प्राणीओमां तेमनी प्रकृतिना जेवा बनीने प्रसरेला छे.

बुद्धिर्जानसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत अेव पृथग्भेदाः ॥^{१३}

अहीं, श्रीकृष्ण द्वारा अपायेल उपदेश, जगतना तमाम स्थावर पदार्थोना ज्ञान माटे अवकाश बतावे छे. श्रीकृष्ण अर्जुनने अेवा अवकाशनुं निर्माण करी आपे छे, के जे अेने विचारी शके, समजी शके अने कर्तव्यनिष्ठ बनी शके ते जीवनने सार्थक बनावे अने मनुष्यजीवनने नवो वळांक मळे. अर्जुन तेने मळेल उपदेशना हार्दने पामीने अंते अर्जुन कहे छे— करिष्ये वचनं तव । उच्च उत्कर्षनो आधार श्रीमद्भगवद्गीता छे अने ते मनुष्यने परम लक्ष्य तरफ गति करवानो बोध आपे छे.

आ भारतीय ज्ञानपरंपरामांथी अेकाद बीज जो व्यवहारमां लाववामां तो जीवो उत्कर्ष संभव बने, संसारना दुःखो होवा छतां तेनो कोइ मोह, माया, अभिमान आदि दुन्यवी भावोथी मुक्त थइ अहं ब्रह्मास्मि । हुं ब्रह्म छुं— सुधीनी गति शक्य बने छे. आथी ज भारतीय ज्ञानपरंपरानुं विशेष महत्व रह्नुं छे.

अंत्यनोंध :

१. पशवश्च मृगाश्च व्यालाश्चोभ्यतोदयः ।
रक्षासिं च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजाः ॥ मनुस्मृतिः १/४३
२. स्वेदजं दशमषकं यूकामक्षिकामत्कुणम् ।
उश्मणश्चोपजायन्ते यच्चचान्यत्किञ्चिदीद्रशम् ॥ मनुस्मृतिः १/४४
३. उदिभज्जाः स्थावराः सर्वे बीजफण्डप्ररोहिणः ।
ओषधयः फलपाकान्ताः बहुपुरुषफलोपगाः ॥ मनुस्मृतिः १/४५
४. निरुक्तम्, अध्याय—१
५. सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत । श्रीमद्भगवद्गीता १/२१
६. भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवैतान्कुरुनिति ॥
तत्रापश्यस्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पौत्रान्सखींस्तथा ॥
श्वषुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ॥ श्रीमद्भगवद्गीता १/२४-२५
७. तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् . श्रीमद्भगवद्गीता १/२७
८. श्रीमद्भगवद्गीता १८/७३

संदर्भ ग्रंथो:

1. Bhagvad Gita, With the commentary of Shankaracharya, Ed. Swami Gambhirananda, Advaita Ashram, Kolkata, 2018
2. Bhagvad Gita and modern life, Munshi K. M., Bhartiya Vidyabhavan, Bombay, 1955
3. मनुस्मृतिः, (सरळ गुजराती भाषांतर सहित), शास्त्री गिरिजाशंकर मयाशंकर, सस्तुं साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदावाद, १०मी आवृत्ति, प्र. आ. २०१२
4. मनुस्मृतिः, हिन्दी टीका सहित, शर्मा केशवप्रशाद, श्रीवेकटेश्वर प्रेस, बोम्बे
5. निरुक्तम्, पाक्षे देवेन्द्रनाथ, हला प्रकाशन जयपुर, २००७
6. भारतीय धर्म और दर्शन, उपाध्याय बलदेव शारदा मन्दिर बनारस, १९४५